

बाँधों को तोड़ दो



अनुराग शर्मा

हिन्दी
A D D A

बाँधों को तोड़ दो

"ये लोग होते कौन हैं आपको रोकने वाले? ऐसे कैसे बंद कर देंगे? उन्होंने कहा और आप सब ने मान लिया? चोर, डाकू, जेबकतरे सब तो खुलेआम घूमते रहते हैं इन्हीं सडकों पर... सारी दुश्मनी सिर्फ रिक्शा से निकाल रहे हैं? इसी रिक्शा की बदौलत शहर

भर में हजारों गरीबों के घर चल रहे हैं। और उनका क्या जो अपने स्कूल, दुकान, और दफ्तर तक रिक्शा से जाते हैं? क्या वे सब लोग अब कार खरीद लेंगे?"

छोटा बेटा रामसिंह बहुत गुस्से में था। गुस्से में तो हरिया खुद भी था परंतु वह अब इतना समझदार था कि अपने आँसू पीना जानता था। लेकिन बेचारे बच्चों को दुनिया की समझ ही कहाँ होती है? वे तो सोचते हैं कि संसार में सब कुछ न्याय के अनुसार हो। और फिर रामसिंह तो शुरू से ही ऐसा है। कहीं भी कुछ भी गलत हो रहा हो, उसे सहन नहीं होता है, बहुत गुस्सा आता है।

इस दुख की घड़ी में जब हरिया बड़ी मुश्किल से अपनी हताशा को छिपा रहा है, उसे अपने बेटे पर गर्व भी हो रहा है और प्यार भी आ रहा है। हरिया को लग रहा है कि बस दो चार साल रिक्शा चलाने की मोहलत और मिल गई होती तो इतना पैसा बचा लेता कि रामसिंह को स्कूल भेजना शुरू कर देता। अब तो लगता है कि अपना सब सामान रिक्शे पर लादकर किसी छोटे शहर का रास्ता पकड़ना पड़ेगा।

"अगर सभी रिक्शेवाले एक हो जाएँ और यह गलत हुक्म मानने से मना कर दें तो सरकार चाहे कितनी भी जालिम हो उन्हें रोक नहीं पाएगी" अभी चुप नहीं हुआ है रामसिंह।

उसे इस तरह गुस्से में देखकर हरिया को तीस साल पुरानी बात याद आती है। हरिया यहाँ नहीं है, इतना बड़ा भी नहीं हुआ है। वह बिल्कुल अपने छोटे से राम के बराबर है, बल्कि और भी छोटा। गाँव की पुरानी झोंपड़ी में खपड़ल के बाहर अधनंगा खड़ा है। पिताजी मुँह लटकाए चले आ रहे हैं। वह हमेशा की तरह खुश होकर उनकी गोद में चढ़ने के लिए दौड़ता हुआ आगे बढ़ता है। उसे गोद में लेने के बजाए पिताजी खुद ही जमीन पर उकड़ूँ बैठ जाते हैं। पिताजी की आँख में आँसू है। माँ तो खाना बनाते समय रोज ही रोती है मगर पिताजी तो कभी नहीं रोते। तो आज क्यों रो रहे हैं। वह अपने नन्हें हाथों से उनके आँसू पोछकर पूछता है, "क्या हुआ बाबा? रोते क्यों हो?"

"हमें अपना घर, यह गाँव छोड़कर जाना पड़ेगा बेटा हरिराम" पिताजी ने बताया।

पूछने पर पता लगा था कि उनके गाँव और आसपास के सारे गाँव डुबोकर बाँध बनाया जाने वाला था।

नन्हा हरिया नहीं जानता था कि बाँध क्या होता है। लेकिन उस वय में भी उसे यह बात समझ आ गई थी कि यह उसके घर-द्वार, कोठार, नीम, शमी, खेत और गाँव को

डुबोने की योजना है। कोई उसके घर को डुबोने वाला है, यह खयाल ही उसे गुस्सा दिलाने के लिए काफी था। फिर भी उसने पिताजी से कई सवाल पूछे।

"ये लोग कौन हैं जो हमारा गाँव डुबो देंगे?"

"ये सरकार है बेटा, उनके ऊपर सारे देश की जिम्मेदारी है।"

"जिम्मेदार लोग हमें बेघर क्यों करेंगे? वे हत्यारे कैसे हो सकते हैं?" हरिया ने पूछा।

"वे हत्यारे नहीं हैं, वे सरकार हैं। बाँध से पानी मिलेगा, सिंचाई होगी, बिजली बनेगी, खुशहाली आएगी।"

"सरकार कहाँ रहती है?"

"बड़े-बड़े शहरों में - कानपुर, कलकत्ता, दिल्ली।"

"बिजली कहाँ जलेगी?"

"उन्हीं बड़े-बड़े शहरों में - कानपुर, कलकत्ता, दिल्ली।"

"तो फिर बाँध के लिए कानपुर कलकत्ता दिल्ली को क्यों नहीं डुबाते हैं ये लोग? हमें ही क्यों जाना पड़ेगा घर छोड़कर?"

"ये त्याग है बेटा। अम्मा ने दधीचि और पन्ना धाय की कहानियाँ सुनाई थी, याद है?"

"सरकार त्याग क्यों नहीं करती है? तब भी हमने ही किया था। अब भी हम ही करें?"

पिताजी अवाक अपने हरिराम को देख रहे थे। ठीक वैसे ही जैसे आज वह अपने रामसिंह को देख रहा है। हरिया ने अपनी बाँह से आँख पोंछ ली। रामसिंह अभी भी गुस्से में बोलता जा रहा था। रधिया एक कोने में बैठकर खाने के डब्बों को पुरानी चादर में बाँध रही थी। ठीक वैसी ही दुबली और कमजोर जैसे अम्मा दिखती थी तीस साल पहले।

